

KINDS OF SELF

आत्म को विभिन्न प्रकार एवं रूपों में जाना जाता है।
आत्म के इन विभिन्न रूपों का निर्माण भौतिक
एवं समाज-सांस्कृतिक परिवर्तनों द्वारा होने वाली
अन्तर्क्रियाओं के परिणाम-स्वरूप ही सम्भव
होता है। हम आत्मत्व के अनेक रूप पर
उस समय ध्यान आणिक आकर्षित करते
हैं जब हम नवजात शिशु अथवा
होने पर युवा के लिए जो-जो से
रोता है, जबकि बालक की वह चीख
प्रतिवर्ष परिवर्तित होता है।

Difference between Personal self and Social self)

Personal self → इसमें एक ऐसा आभास होता है
जिसमें व्यक्ति मुख्य रूप से
अपने बारे में ही संकट होता है का अनुभव करता है

जैसे - व्यक्तिगत स्वतंत्रता, व्यक्तिगत
उत्तरदायित्व, व्यक्तिगत उपलब्धि
व्यक्तिगत सुख - सुविधाएँ (आदि)

सामाजिक आत्म (Social Self)

सामाजिक आत्म का रूपलेखन या दूसरे के सम्बन्ध में होता है। जिसके अन्तर्गत सहयोग, एकता, पक्षी आदि ध्यान आकर्षित किया जाता है। इस प्रकार आत्म परिवर्तन और सामाजिक सम्बन्धों का महत्व देता है।

अतः इस आत्म का पारिवारिक (अथवा सामाजिक) आत्म (Relational Self) के रूप में भी जाना जाता है।

आत्म के सामाजिक एवं व्यवहारिक पक्ष Cognitive and Behavioural Aspects of Self =

संसार के प्रत्येक भाग के मनोवैज्ञानिकों ने आत्म के अध्ये में अभिरूचि दर्शायी है। इन अध्ययनों के द्वारा व्यवहार के कुछ ऐसे पक्षों का परीक्षा किया है जिसका सम्बन्ध आत्मा से है। जैसे - कि हम पहले यह पूछें कि प्रत्येक मनुष्य

यह जानने का इच्छुक होता है कि हम
कौन हैं और क्या बात हमको दूसरे से
भिन्न बनाती है। हम अपनी व्यक्तिगत और
सामाजिक अनिष्टताओं से जुड़े रहते हैं।
जिन कारणों से हम अपने आपका व्यवहार
करते हैं और अपने गुणों और क्षमताओं
को विषय में जो विचार रखते हैं, उसी
को आत्म संप्रत्यय या आत्म-धारणा
~~Self~~ self-concept कहा जाता है।